(I) Lecture Series No:- 63.

Online class
Date - 18/2/2022.
Day -
Time - 10:40 to 10:50 A.M

Topic,

(1) Evolution.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
BA Part - I
Paper - (5)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans: ⇒

न्याय वैशेषिक की भाँति ही सांख्य का उद्देश्य भी दुःखों से मुक्ति पाने के लिए तत्व ज्ञान - प्राप्ति है। इनके अनुसार सब प्रकार के दुःखों से हमेशा के लिए छूट जाना ही मुक्ति है। इस प्रकार के बंधन और मुक्ति - सिद्धान्त को समझने के लिए सर्वप्रथम सांख्य के दुःखों के प्रकारों को समझना आवश्यक है। सांख्य ने तीन प्रकार के दुःख माने हैं।

जो अग्र प्रकार हैं :-

(i) आध्यात्मिक दुःख :- पुरुष को अपनाने शरीर अथवा मन आदि से जो कष्टमय अनुभव होते हैं, उन्हें आध्यात्मिक दुःख कहा जाता है।

P.T.O.

(2)

यथा - शारीरिक रोग, मानसिक व्याधियाँ जैसे - ईर्ष्या, क्रोध, संताप आदि।

(2) आधिभौतिक दुःख :- दूसरे को जो दुःख बाह्य भौतिक पदार्थों से होते हैं उन्हें आधिभौतिक दुःख कहा जाता है।

यथा - कांटा लग जाना, बिच्छु के काटने से उत्पन्न दुःख लाठी लगने से उत्पन्न दुःख आदि।

(3) आधिदैविक दुःख : बाह्य दैविक शक्तियों से उत्पन्न दुःखों को आधिदैविक दुःख कहा जाता है।

यथा - सूखा पड़ना, अकाल पड़ना अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि।

मुक्ति - सभी मनुष्य इन तीन दुःखों

P.T.O.

(3)

से बचने की इच्छा करते हैं। सभी यह चाहते हैं कि उनके सभी दुःखों का हमेशा के लिए अंत हो जाये किन्तु जीवन रहते ऐसा होना असंभव है क्योंकि दुःखों का मूल कारण अज्ञान है। अज्ञान से तात्पर्य आत्मा में अपने यथार्थ स्वरूप के ज्ञान के अभाव से है और यह अज्ञान अहंकार के कारण से उत्पन्न होता है क्योंकि जब तक चित्त में वस्तुओं के प्रति "मैं" और "मेरेपन" का भाव बना रहता है तभी तक उसमें इनके प्रति आकर्षण रहता है जिससे इन्हें प्राप्त करने की प्रवृत्ति रहती है। तभी तक उसमें इनके प्रति आकर्षण रहता है जिससे इन्हें प्राप्त करने की प्रवृत्ति रहती है।

"END"